VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS

(आज का विश्लेषण)

(13 January 2025)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- महाकुंभ 2025 का अन्वेषण: भारत की खोज एवं स्वयं का साक्षात्कार
- 2025 'जनरेशन बीटा' का स्वागत करने वाला वर्ष
- जेड (Z)-मोड़ सुरंग परियोजना का देश के लिए रणनीतिक महत्व
- MCQ

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

महाकुंभ 2025 का अन्वेषण: भारत की खोज एवं स्वयं का साक्षात्कार

परिचय:

- महाकुंभ मेला सिर्फ़ धार्मिक आयोजन भर नहीं है; यह दुनिया के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक आयोजनों में से एक है। हर 12 साल में आयोजित होने वाला यह भव्य उत्सव करोड़ों तीर्थयात्रियों, साधुओं और पर्यटकों को भारत के एक पवित्र स्थान पर एक साथ लाता है।
- 2025 का महाकुंभ मेला प्रयागराज में आयोजित किया जा रहा है, जो आध्यात्मिक इतिहास से भरा शहर है और तीन पवित्र नदियों- गंगा, यमुना और रहस्यमयी सरस्वती के मिलन स्थल के रूप में प्रतिष्ठित है। त्रिवेणी संगम के रूप में जाना जाने वाला यह स्थल गहरा धार्मिक महत्व रखता है, जो इसे इस तरह के विशाल आध्यात्मिक समागम के लिए आदर्श स्थान बनाता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

महाकुंभ 2025 के बारे में:

- महाकुंभ मेला का महत्व न केवल इसके पैमाने में है, बल्कि हिंदू पौराणिक कथाओं और परंपराओं में इसकी गहरी जड़ें भी हैं। माना जाता है कि इस आयोजन की उत्पत्ति समुद्र मंथन की प्राचीन कहानी से हुई है, जहाँ देवताओं और राक्षसों ने अमरता प्रदान करने वाले अमृत के कलश के लिए लड़ाई लड़ी थी। किंवदंती के अनुसार, इस दिव्य अमृत की बूंदें भारत में चार स्थानों - प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक - में गिरी थीं, जो कुंभ मेले के लिए पवित्र स्थल बन गए।
- चूंकि महाकुंभ मेला इन सभी स्थानों पर हर 12 साल में एक बार ही होता है, इसलिए 2025 का आयोजन विशेष रूप से खास है। इसमें अभूतपूर्व संख्या में श्रद्धालु और आगंतुक आने की उम्मीद है, जो आध्यात्मिक शुद्धि, दिव्य आशीर्वाद और अपनी आस्था से गहरा जुड़ाव चाहते हैं।
- यह समागम केवल धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में नहीं है; यह जीवन, संस्कृति और आस्था की स्थायी शक्ति का उत्सव है, जो इसे एक अनूठा आयोजन बनाता है जो धार्मिक सीमाओं से परे है और दुनिया भर के लोगों के साथ प्रतिध्वनित होता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कुम्भ का प्रतीकात्मक अर्थ:

- महाकुंभ मेले के केंद्र में एक प्रतीक है जो ब्रह्मांडीय महत्त्व से भरा हुआ है–"कुम्भ" या पवित्र कलश। यह कलश, प्रतीकात्मकता से भरा हुआ, अपनी भौतिक रूपरेखा से परे जाकर मानव शरीर और आध्यात्मिक जागरण की खोज को मूर्त रूप देता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कुम्भ उस दिव्य पात्र का प्रतीक है जो समुद्र मंथन के दौरान निकला था, जिसमें "अमृत" नामक दिव्य पेय था।
- कुम्भ मेला एक अद्वितीय महापर्व है, जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ, भाषाओं और परम्पराओं के धागे सहजता से आपस में मिलते हैं। तीर्थयात्री, अपनी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, आध्यात्मिकता के इस उत्सव में एक साथ आते हैं, जो समाज की सीमाओं से परे भाईचारे की भावना को बढ़ावा देती हैं।
- कुम्भ मेला एक जीवंत सांस्कृतिक महोत्सव भी है। जैसे ही तीर्थयात्री अनुष्ठानों और प्रार्थनाओं में लीन होते हैं, वातावरण पारंपरिक संगीत की धुनों, सांस्कृतिक प्रदर्शनों के जीवंत रंगों और पवित्र नृत्यों की ताल से परिपूर्ण हो जाता है।
- वैश्वीकरण के युग में, महाकुम्भ मेला एक वैश्विक तीर्थयात्रा में विकसित हो गया है। दुनिया भर के तीर्थयात्री और आध्यात्मिक साधक भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार कर पवित्र स्थलों की यात्रा करते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

आत्मा की तीर्थयात्रा:

- जैसे ही हम महाकुम्भ के गहन आंतरिक अर्थ में उतरते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि यह समागम केवल एक जमावड़ा नहीं है–यह एक आंतरिक यात्रा है। यह आत्मा की एक खोज है, आत्मा का शुद्धीकरण है और हमारी साझा मानवता का उत्सव है।
- कुम्भ मेला रस्मों और समारोहों से परे एक आंतरिक तीर्थयात्रा है, जहाँ व्यक्ति विशाल समागम के बीच ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध की तलाश करते हैं।

ज्योतिष गणना के क्रम में कुम्भ का आयोजन:

- बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा-तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।
- बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।
- बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में गोदावरी तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।

- बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में शिप्रा तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।

महाकुंभ मेले का ऐतिहासिक विकास यात्रा:

- महाकुंभ मेला दुनिया के सबसे पुराने और सबसे स्थायी धार्मिक त्योहारों में से एक है, जिसकी जड़ें हज़ारों साल पुरानी हैं।
- कुंभ मेले का सबसे पहला संदर्भ प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों, जैसे कि पुराणों और महाभारत में मिलता है। हिंदू धर्म के सबसे पुराने पवित्र ग्रंथों में से एक ऋग्वेद में भी पापों को धोने और आध्यात्मिक शुद्धता प्राप्त करने के लिए पवित्र नदियों में स्नान करने की रस्म का उल्लेख है।

ऐतिहासिक संदर्भ:

- कुंभ मेले के आयोजन का सबसे पहला ऐतिहासिक रिकॉर्ड 7वीं शताब्दी ई. में भारतीय सम्राट हर्ष के शासनकाल के दौरान मिलता है। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने प्रयागराज में गंगा नदी के तट पर एक भव्य धार्मिक सभा में अपनी यात्रा का दस्तावेजीकरण किया। माना जाता है कि यह सभा कुंभ मेले का प्रारंभिक रूप थी।
- मध्यकाल के दौरान, कुंभ मेले का महत्व और पैमाना बढ़ता रहा।

- आधुनिक युग में, कुंभ मेले का विस्तार जारी रहा है, जिसमें दुनिया भर से लाखों प्रतिभागी शामिल होते हैं। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में आवगमन व्यवस्था अधिक संगठित हो गई, जिसमें तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने के लिए सड़क, रेलवे और स्वच्छता सुविधाओं जैसे बुनियादी ढांचे की शुरुआत की गई थी।

वैश्विक स्तर पर कुंभ मेले का महत्व:

- उल्लेखनीय है कि दुनिया के सबसे बड़े शांतिपूर्ण समागम के रूप में, कुंभ मेला न केवल हिंदू भक्तों को बल्कि दुनिया भर से आध्यात्मिक साधकों, शिक्षाविदों और पर्यटकों को भी आकर्षित करता है।
- कुंभ मेला विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के लोगों को भारतीय आध्यात्मिकता की जीवंतता का अनुभव करने और देश के समृद्ध सांस्कृतिक परिदृश्य का पता लगाने का दुर्लभ अवसर प्रदान करता है।
- कुंभ मेले में वैश्विक रुचि सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अवसर भी प्रदान करती है, जिससे समृद्ध अंतर-सांस्कृतिक संवाद में योगदान मिलता है।

यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता:

- वर्ष 2017 में, कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की यूनेस्को की सूची में शामिल किया गया, जिससे इसका वैश्विक महत्व और भी पुख्ता हो गया।

- यूनेस्को द्वारा यह मान्यता कुंभ मेले को एक सांस्कृतिक खजाने के रूप में स्वीकार करती है जो शांति, सहिष्णुता और मानवतावाद के मूल्यों का प्रतीक है।
- यह मान्यता कुंभ मेले को एक जीवंत परंपरा के रूप में संरक्षित करने और बढ़ावा देने के महत्व को भी रेखांकित करता है, जो अपनी गहरी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जड़ों को बनाए रखते हुए निरंतर विकसित हो रही है।

महाकुंभ मेले का आर्थिक महत्व:

- महाकुंभ 2025 मेले से 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार होने का अनुमान है, जो भारत की अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण बढ़ावा देगा। इस मेले के दौरान अंतरराष्ट्रीय आगंतुकों की आमद स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी महत्वपूर्ण बढ़ावा देगी, क्योंकि तीर्थयात्री और पर्यटक आवास, भोजन, परिवहन और स्मृति चिन्हों पर खर्च करते हैं।
- उल्लेखनीय है कि उद्योग विशेषज्ञों के अनुमान के अनुसार, महाकुंभ से देश की सकल घरेलू उत्पाद में 1% से अधिक की वृद्धि होने की उम्मीद है।
- उत्तर प्रदेश सरकार को इस आयोजन में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उपस्थितियों सहित लगभग 40 करोड़ आगंतुकों के आने की उम्मीद है। सरकारी अनुमान बताते हैं कि

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

यदि 40 करोड़ आगंतुकों में से प्रत्येक औसतन 5,000 रुपये खर्च करता है, तो महाकुंभ से 2 लाख करोड़ रुपये का व्यापार हो सकता है। जबकि उद्योग विशेषज्ञों का अनुमान है कि प्रति व्यक्ति औसत व्यय 10,000 रुपये तक बढ़ सकता है, जिससे संभावित रूप से कुल आर्थिक प्रभाव 4 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ सकता है।

2025 'जनरेशन बीटा' का स्वागत करने वाला वर्ष:

चर्चा में क्यों है?

- 2025 में बच्चों की एक पूरी नई पीढ़ी का स्वागत होगा जो अपने तरीके से दुनिया को आकार देंगे। 2025 और 2039 के बीच पैदा होने वाले बच्चों को जेन बीटा के नाम से जाना जाएगा। ये बच्चे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वर्चुअल रियलिटी के प्रभुत्व वाली दुनिया में रहेंगे, जहाँ कई तकनीकी प्रगति देखने को मिलेगी।
- विशेषज्ञों के अनुसार, जनरेशन बीटा सततता की दिशा में अधिक काम करेगी क्योंकि उन्हें जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या विस्फोट और अन्य पर्यावरणीय चिंताओं जैसी चुनौतियों से जूझती दुनिया विरासत में मिलेगी।
- हालांकि, विशेषज्ञ इस पीढ़ी को लेकर चिंतित हैं क्योंकि उनका मानना है कि इस पीढ़ी में रचनात्मकता और पारस्परिक कौशल की कमी हो सकती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

पीढ़ी या जनरेशन का क्या अर्थ है?

- पारंपरिक रूप से पीढ़ी या जनरेशन का मतलब एक ही समय में पैदा हुए लोगों के समूह से है। इस शब्द को कार्ल मैनहेम ने लोकप्रिय बनाया, जिन्होंने 1928 में "पीढ़ियों की समस्या" नामक शोधपत्र प्रकाशित किया था।
- मैनहेम ने एक विशेष पीढ़ी के व्यक्तियों की पहचान करने और उन्हें उनके भौतिक स्थान और सामाजिक स्थिति, अपने समय की बड़ी बौद्धिक चर्चाओं में उनकी भागीदारी और इन पर उनकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर अलग पहचान देने की कोशिश की।
- समाजशास्त्रियों ने इस समझ को और आगे बढ़ाया है, लेकिन आज उनका मानना है कि वह कोहोर्ट या पीढ़ीगत कोहोर्ट का संकेत दे रहे थे। कोहोर्ट का मतलब एक ही समय अवधि के आसपास पैदा हुए लोगों के समूह से है, जिन्होंने एक समान ऐतिहासिक घटना का अनुभव किया है और उनके मूल्य प्रणाली समान हो सकती हैं।

विभिन्न जनरेशन की संपूर्ण सूची:

ग्रेटेस्ट जनरेशन (1901-1927):

- ग्रेटेस्ट जनरेशन महामंदी के दौरान बड़ी हुई और द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने के लिए आगे बढ़ी, अपने लचीलेपन और बलिदान के लिए "ग्रेटेस्ट जनरेशन" की उपाधि अर्जित की।

- इस पीढ़ी को मुख्य रूप से कठिनाई, देशभक्ति और सामुदायिक भावना ने आकार दिया था। इस पीढ़ी के प्रमुख गुण निस्वार्थता, कर्तव्य और युद्ध के बाद दुनिया के पुनर्निर्माण के लिए प्रतिबद्धता हैं।

द साइलेंट जनरेशन (1928-1945):

- द साइलेंट जनरेशन अपनी अनुशासित और अनुरूपतावादी प्रवृत्तियों के लिए जानी जाती है, क्योंकि यह पीढ़ी द्वितीय विश्व युद्ध और शीत युद्ध के शुरुआती चरणों के दौरान बड़ी हुई थी।
- वे कड़ी मेहनत, निष्ठा और स्थिरता को महत्व देते थे, अक्सर खुले विद्रोह या सक्रियता से दूर रहते थे। कई लोग नागरिक अधिकार आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, हालांकि शांत भूमिका में।

बेबी बूमर्स (1946 - 1964):

- यह पीढ़ी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पैदा हुई थी और इसका नाम युद्ध के बाद के बेबी बूम के नाम पर रखा गया है। आशावाद में उछाल को देखते हुए, इस पीढ़ी को आमतौर पर आदर्शवाद और सत्ता के प्रति अविश्वास से जोड़ा जाता है।
- अमेरिका में, इस अवधि के दौरान महत्वपूर्ण घटनाओं में नागरिक अधिकार आंदोलन, वुडस्टॉक, वियतनाम युद्ध, साथ ही जेएफ कैनेडी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे प्रभावशाली नेताओं की हत्याएं शामिल हैं।

- दूसरी ओर, भारत में, यह एक ऐसी पीढ़ी है जो बड़े पैमाने पर स्वतंत्र भारत में पली-बढ़ी और देश को समाजवादी आर्थिक मॉडल अपनाते देखा। देश ने अपनी सीमाओं पर युद्ध लड़े और अपने उद्योगों का राष्ट्रीयकरण देखा। यह पीढ़ी हरित क्रांति के प्रभाव को देखते हुए बड़ी हुई - जिसने कृषि उत्पादकता में जबरदस्त सुधार किया।

जेन एक्स (1964 - 1979):

- अमेरिका में यह पीढ़ी इस विचार को आत्मसात करती है कि कई लंबे समय से चली आ रही संस्थाओं को चुनौती दी जा सकती है, जिसमें एक्स व्यवस्था के प्रति अविश्वास का प्रतिनिधित्व करता है, चाहे वह विवाह हो या कॉर्पोरेट रोजगार।
- जेन एक्स आर्थिक अनिश्चितता, तलाक की बढ़ती दरों और शीत युद्ध की समाप्ति के समय में बड़ा हुआ। इन वर्षों में पैदा हुए लोग अपनी स्वतंत्रता, संदेह और उद्यमशीलता की भावना के लिए जाने जाते हैं।
- भारत में जेन एक्स उस विशाल सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को देखने के लिए बड़ा हुआ, जो देश को परिभाषित करने वाला था।

जेन वाई या मिलेनियल्स (1980 - 1995):

- माना जाता है कि इस पीढ़ी ने वैश्विक स्तर पर इसी तरह के विकास का अनुभव किया है, जिसका मुख्य कारण लगभग उसी समय तकनीक को अपनाना है।

- यह पीढ़ी अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में तकनीक-प्रेमी है, साथ ही सामाजिक रूप से जागरूक भी है।
- आतंकवाद और स्कूल हिंसा जैसी घटनाएँ इस पीढ़ी की प्रारंभिक घटनाओं में से हैं। इस तरह की हिंसा की अनियमितता ने इस पीढ़ी को वर्तमान में जीने को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित किया है, और शादी जैसे पारंपरिक जीवन के मील के पत्थर को टालने या टालने की कोशिश की है।

जेन जेड या आईजेन (1996 - 2010):

- आज की सबसे चर्चित पीढ़ी, जेन जेड या जूमर्स आईजेन आज युवा वयस्कों का गठन करते हैं। यह पीढ़ी पहली पीढ़ी है जो वास्तव में डिजिटल मूल निवासी के रूप में विकसित हुई और 2007 की मंदी के दौरान बड़ी हुई, जो व्यापक वित्तीय अस्थिरता का दौर था।
- इस पीढ़ी, इसकी निरंतर ऑनलाइन उपस्थिति और जवाबदेही की खोज के बारे में बहुत कुछ कहा गया है।
- यह वह पीढ़ी है जिसने मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बारे में बात करना सामान्य कर दिया है, और अमेरिकी सर्जन जनरल विवेक मूर्ति ने 2023 में जेन जेड के सामने आने वाली अकेलेपन की महामारी के बारे में बात की।

- यह पीढ़ी व्यक्तिगत विकास के अवसरों की तलाश करते हुए, दुनिया को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले अपने काम की परवाह करती है।

जेन अल्फा (2011 - 2024):

- 21वीं सदी में जन्म लेने वाली पहली पीढ़ी के रूप में, यह अब तक की सबसे ज़्यादा तकनीक-प्रेमी पीढ़ी है। यह एक ऐसी पीढ़ी है जिसने हमेशा सोशल मीडिया के अस्तित्व वाली दुनिया को जाना है और अपने शुरुआती वर्षों में कोविड महामारी का अनुभव किया है।
- जेन अल्फा का पालन-पोषण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्मार्ट डिवाइस और इमर्सिव तकनीकों की हाइपरकनेक्ट दुनिया में हो रहा है। माना जाता है कि जेन अल्फा अब तक की सबसे शिक्षित पीढ़ी है, जिसका वैश्विक दृष्टिकोण तेजी से हो रहे तकनीकी और पर्यावरणीय परिवर्तनों से प्रभावित है।
- मैकक्रिंडल के अनुसार, इस पीढ़ी में अपने पर्यावरण और मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ी है, और यह बढ़ती स्थिरता और समावेशन की दिशा में नीति और तकनीकी विकास को आगे बढ़ाने के लिए तैयार है।

कैसी होगी जनरेशन बीटा?

- जनरेशन बीटा नवीनतम पीढ़ी है, जो उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग और दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी के और अधिक एकीकरण के प्रभुत्व वाली दुनिया

में रहेगी। जेन बीटा से ऐसे माहौल में बड़ा होने की उम्मीद है जो जिज्ञासा और समावेशिता को बढ़ावा देता है।

- उल्लेखनीय है कि यह पीढ़ी पर्यावरण संबंधी चुनौतियों और संभावित समाधान उनके प्रारंभिक वर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। उनसे वैश्विक मानदंडों को फिर से परिभाषित करने, जन्म से ही सततता और तकनीकी नवाचार को अपनाने की भविष्यवाणी की जा रही है।
- एक ब्लॉग पोस्ट में, मैकक्रिंडल ने कहा कि "जबकि जनरेशन अल्फा ने स्मार्ट तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उदय का अनुभव किया है, जनरेशन बीटा एक ऐसे युग में रहेगी जहाँ AI और ऑटोमेशन रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पूरी तरह से शामिल होंगे - शिक्षा और कार्यस्थलों से लेकर स्वास्थ्य सेवा और मनोरंजन तक"। उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की है कि यह पीढ़ी जलवायु परिवर्तन, वैश्विक जनसंख्या परिवर्तन और तेज़ शहरीकरण जैसी सामाजिक चुनौतियों के बीच सततता को एक आवश्यकता के रूप में और न केवल एक प्राथमिकता के रूप में विकसित करेगी।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

जेड (Z)-मोड़ सुरंग परियोजना का देश के लिए रणनीतिक महत्व:

चर्चा में क्यों है?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 13 जनवरी को जम्मू-कश्मीर में जेड-मोड़ सुरंग का उद्घाटन किया जाना, जो श्रीनगर और लद्दाख के बीच हर मौसम में संपर्क सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 6.5 किलोमीटर लंबी, दो लेन वाली सुरंग श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है और इस क्षेत्र में यात्रा को बदलने का वादा करती है।
- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) के तहत 2015 में शुरू की गई यह परियोजना पिछले साल 2,400 करोड़ रुपये की लागत से पूरी हुई थी।

जेड-मोड़ सुरंग परियोजना क्या है?

- 8,652 फीट की ऊंचाई पर बनी जेड-मोड़ सुरंग गगनगीर और सोनमर्ग को जोड़ती है, जो एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। 'जेड-मोड़' नाम निर्माण स्थल के पास जेड-आकार के सड़क खंड को संदर्भित करता है।

- उल्लेखनीय है कि जिस क्षेत्र में सुरंग का निर्माण किया जा रहा है वह 8,500 फ़ीट से अधिक ऊंचाई पर स्थित है और हिमस्खलन की आशंका रहती है, जिससे सर्दियों में सोनमर्ग तक जाने वाली सड़क पर आवागमन असंभव हो जाता है।
- ज़ेड-मोड़ सुरंग से सोनमर्ग को साल भर पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाने की उम्मीद है, साथ ही इसे स्कीइंग और सर्दियों के खेल के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना है। जिन निवासियों को पहले सर्दियों के दौरान क्षेत्र छोड़ना पड़ता था, अब उन्हें निर्बाध कनेक्टिविटी मिलेगी, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि होगी और रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

ज़ेड-मोड़ सुरंग का रणनीतिक महत्व क्या है?

- उल्लेखनीय है कि ज़ेड-मोड़ सुरंग हिमालयी क्षेत्र में संपर्क बढ़ाने और लद्दाख तक पहुँच को बेहतर बनाने के लिए केंद्र की व्यापक पहल का हिस्सा है। ये परियोजनाएँ भारत-चीन सीमा सड़क पहल का भी हिस्सा हैं, जो संवेदनशील क्षेत्रों में रणनीतिक बुनियादी ढाँचे के निर्माण पर केंद्रित है।
- यह सुरंग जम्मू एवं कश्मीर में 'जोजिला सुरंग' परियोजना का हिस्सा है जिसका उद्देश्य श्रीनगर से लद्दाख तक पूरे साल हर मौसम में संपर्क प्रदान करना है।

- इसके साथ ही निर्माणाधीन अतिरिक्त सुरंगों में मनाली-लेह मार्ग पर बारालाचा ला, तंगांग ला और लाचुंग ला सुरंगें शामिल हैं।
- **'जोजिला सुरंग' परियोजना:** कश्मीर घाटी में सोनमर्ग को लद्दाख में द्रास से जोड़ने वाली लगभग 12,000 फीट की ऊंचाई पर जोजिला सुरंग का निर्माण चल रहा है और इसकी दिसंबर 2028 तक पूरा होने की उम्मीद है।
- एक बार पूरी तरह चालू हो जाने पर, ये सुरंगें भारत के रक्षा ढांचे को मजबूत करेंगी, जिससे कारगिल और लद्दाख सेक्टरों में सैन्य आवाजाही और रसद के लिए साल भर पहुँच सुनिश्चित होगी। सुरंग के निर्माण से श्रीनगर, द्रास, कारगिल और लेह क्षेत्रों के बीच सुरक्षित संपर्क प्रदान किया जाएगा।
- सर्दियों में सड़क संपर्क से भारतीय वायुसेना के परिवहन विमानों के माध्यम से सेना के अग्रिम ठिकानों के हवाई रखरखाव पर निर्भरता कम होगी।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

MCQs

1. चर्चा में रहे 'महाकुंभ मेले' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

   1. भारत में चार स्थानों - प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक - में कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।
   2. कुंभ मेले का सबसे पहला संदर्भ प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों, जैसे कि पुराणों और महाभारत में मिलता है।

   उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

   Ans:(c)

2. यूनेस्को ने किस वर्ष 'कुंभ मेले' को अपनी 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची' में शामिल किया?

(a) वर्ष 2011 में

(b) वर्ष 2013 में

(c) वर्ष 2015 में

(d) वर्ष 2017 में

Ans:(b)

3. हाल ही में चर्चा में रहे "जनरेशन बीटा" के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. जनरेशन बीटा नवीनतम पीढ़ी है, जो उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग और दैनिक जीवन में प्रौद्योगिकी के और अधिक एकीकरण के प्रभुत्व वाली दुनिया में रहेगी।
2. विशेषज्ञों के अनुसार इस पीढ़ी में रचनात्मकता और पारस्परिक कौशल की सर्वाधिक प्रगाढ़ता हो सकती है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans:(a)

4. चर्चा में रहे निर्माणाधीन 'जेड-मोड़' सुरंग परियोजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) यह 6.4 किलोमीटर लंबी सुरंग है जो सोनमर्ग को मध्य कश्मीर के गांदरबल जिले से जोड़ेगी।

(b) यह सुरंग श्रीनगर-लेह राजमार्ग के साथ एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल सोनमर्ग तक सभी मौसम में पहुँच सुनिश्चित करेगी।

(c) जिस क्षेत्र में सुरंग का निर्माण किया जा रहा है वह 8500 फीट से अधिक ऊंचाई पर स्थित है

(d) उपर्युक्त सभी सही हैं।

Ans:(d)

5. चर्चा में रहे 'जोजिला सुरंग परियोजना' के रणनीतिक महत्व के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. इसका उद्देश्य श्रीनगर से लद्दाख तक पूरे साल हर मौसम में संपर्क प्रदान करना है।
2. इसके निर्माण से सर्दियों में सेना के अग्रिम ठिकानों तक रखरखाव एवं आपूर्ति के लिए वायु सेना पर निर्भरता कम होगी।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans:(c)